

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ सत्तासी

सिंह का प्रकटीकरण: पैनियम से अंतिम मुहरबंदी तक

Jeff Pippenger

2024-04-17

जब यीशु किसी भविष्यसूचक सत्य की मुहर खोलते हैं, तो उनका प्रतिनिधित्व यहूदा के गोत्र के सिंह के रूप में किया जाता है, और कैसरिया फिलिप्पी में यहूदा के गोत्र के सिंह ने इस सत्य की मुहर खोलना आरम्भ किया कि 'उसे यरूशलेम जाना आवश्यक है, और प्राचीनों, महायाजकों और शास्त्रियों से बहुत-सी पीड़ाएँ सहनी हैं, और मार डाला जाना है, और तीसरे दिन फिर से जी उठना है'। वे सत्य उस संदेश के साथ मेल खाते हैं जिसे उन्होंने एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाने के समय की शुरुआत में खोला था, और उसी अवधि के अंत में फिर से। वे सत्य दानियेल अध्याय 11 के पद 13 से 15 में प्रस्तुत संदेश के अनुरूप हैं।

जब वह एक लाख चवालीस हज़ार को उस सत्य की मुहर खोलकर उसे प्रकट करता है, तो वह ऐसा 'पंक्ति पर पंक्ति' की पद्धति से करता है, क्योंकि वहीं परमेश्वर के राज्य की 'चाबियाँ' मिलती हैं। वे सत्य खाए जाने चाहिए, क्योंकि वे परमेश्वर के राज्य की चाबियाँ हैं, और परमेश्वर का राज्य उसकी प्रजा के भीतर होना है।

और जब फरीसियों ने उससे पूछा कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा, तो उसने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "परमेश्वर का राज्य देखने से नहीं आता; और न वे कहेंगे, देखो, यहाँ! या, देखो, वहाँ! क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है।" लूका 17:20, 21.

दुष्टात्माएँ भी विश्वास करती हैं, और फिर भी काँपती हैं, क्योंकि केवल विश्वास कर लेना पर्याप्त नहीं है; 'सत्य' को उसी प्रकार आपका अंग बनना चाहिए, जैसे खाया जाने वाला भौतिक भोजन बन जाता है। पद तेरह से पंद्रह के इतिहास में यहूदा के गोत्र का सिंह शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से संबंधित सत्यताओं की मुहर खोलता है, और वे सत्य आने वाले संकट से पहले बुद्धिमान कुँवारियों के ललाटों पर मुहर अंकित कर देते हैं। यहूदा के गोत्र का सिंह मत्ती अध्याय सोलह की गवाही को भली-भाँति जानता था, और कैसरिया फिलिप्पी की उसकी यात्रा दानियेल की पैनियम विषयक गवाही के अनुरूप थी; और वह जानता था कि कैसरिया फिलिप्पी में जिस क्रूस की छाया के नीचे वह और उसका चेला खड़े थे, वह उसकी अन्तिम दिनों की प्रजा के इतिहास में आने वाले रविवार के कानून की छाया का प्रतिनिधित्व करती थी।

तब से यीशु अपने चेलों को यह समझाने लगा कि उसे यरूशलेम जाना अवश्य है, और पुरनियों, महायाजकों और शास्त्रियों से बहुत कष्ट उठाना, और मार डाला जाना, और तीसरे दिन फिर जीवित होना है। तब पतरस उसे किनारे ले जाकर उसे डाँटने लगा और कहने लगा, 'हे प्रभु, ऐसा आप से कभी न हो; यह बात आप पर कभी नहीं आएगी।' परन्तु वह मुड़कर पतरस से कहा, 'हे शैतान, मेरे पीछे हट! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर मन नहीं लगाता, पर मनुष्यों की बातों पर।' तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह अपने आप का इनकार करे, अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खो देगा; परन्तु जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। क्योंकि यदि मनुष्य सारे संसार को प्राप्त कर ले और अपने प्राण का नाश कर बैठे, तो उसे क्या लाभ? या अपने प्राण के बदले मनुष्य क्या देगा? क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आने वाला है; तब वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ खड़े कुछ लोग ऐसे हैं जो मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, जब तक कि वे मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते न देख लें।' मत्ती 16:21-28.

सबसे पहले—और इसलिए प्रथम उल्लेख के नियम के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण—बात जो यीशु ने क्रूस के दुखों के विषय में अपने शिष्यों से कही, यह थी कि यदि वे उनके पीछे चलना चुनते हैं, तो उन्हें अपना-अपना क्रूस उठाना होगा। सिस्टर वाइट स्पष्ट रूप से कहती हैं कि क्रूस जूआ भी है। जूआ और क्रूस मनुष्य की व्यक्तिगत इच्छा के प्रतीक हैं, और सब कुछ इच्छा के सही उपयोग पर निर्भर करता है। परमेश्वर के मंदिर को सहारा देने वाली शक्ति एक 'स्तंभ' पर लटकाया गया वध किया हुआ मेम्ना है। वध किया हुआ मेम्ना निम्न देहगत प्रकृति के क्रूस पर चढ़ाए जाने का प्रतिनिधित्व करता है, और वह 'स्तंभ' जिस पर मृत देह लटकाई जाती है, वह इच्छा है। मसीह ने यह उदाहरण दिया कि कैसे विजय पाई जाती है—उन्होंने अपनी इच्छा को सदा अपने पिता की इच्छा के अधीन रखा; और उस कार्य को पूरा करने पर, वे अपने पिता के साथ सिंहासन पर बैठ गए। विजय का प्रतीक है स्तंभ पर लटकाया गया वध किया हुआ मेम्ना। ये सब सत्य सीधे उन लोगों से संबद्ध हैं जो पतरस का प्रतिनिधित्व करते हैं।

फिलाडेल्फिया को, जिसका प्रतिनिधित्व एक्सेटर तंबू करता है, यह कहा गया है:

जो विजयी होगा, उसे मैं अपने परमेश्वर के मंदिर में एक स्तंभ बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर नहीं जाएगा; और मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर का नाम, जो नया यरूशलेम है, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतरता है, लिखूँगा; और मैं उस पर अपना नया नाम लिखूँगा। जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। प्रकाशितवाक्य 3:12, 13.

जो उसी प्रकार विजयी होगा जैसे मसीह विजयी हुआ, वह नया नाम प्राप्त करेगा, जैसे साइमन बरयोना ने पाया था; और वह परमेश्वर के मंदिर में एक स्तंभ बन जाएगा, जैसे मसीह वह मेम्ना है जिसका वध किया गया और जिसे परमेश्वर के मंदिर में एक स्तंभ पर लटकाया गया। जब वह वैसे ही विजयी होगा जैसा मसीह विजयी हुआ, तब वह भी स्वर्गीय स्थानों में सिंहासन पर बैठेगा, जैसा मसीह ने किया।

लाओदिकिया को, जिसका प्रतिनिधित्व वाटरटाउन का तंबू करता है, यह कहा गया है:

देख, मैं द्वार पर खड़ा होकर खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरी आवाज़ सुनकर द्वार खोल दे, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ। जो विजय पाता है, उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूँगा, जैसे कि मैं भी विजयी हुआ और अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया हूँ। जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहती है। प्रकाशितवाक्य 3:20-22.

पहला सत्य जो यीशु ने चेलों को बताया, जब उन्होंने क्रूस के दुःखों को प्रकट करना शुरू किया, यह था कि मनुष्यों को ठीक उसी प्रकार विजय पाना चाहिए जैसा उन्होंने उसका उदाहरण देकर दिखाया था। मनुष्यों को देह को उसकी इच्छाओं और वासनाओं सहित क्रूस पर चढ़ाना चाहिए। जब यह हो जाएगा, तब वे स्वर्गीय स्थानों में बैठाए जाएंगे।

जब हम पापों में मरे हुए ही थे, तब भी उसने हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह से तुम उद्धार पाए हो;); और उसने हमें उसके साथ उठाया, और मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। इफिसियों 2:5, 6.

व्यक्तिगत जिम्मेदारी के संदर्भ में क्रूस पर चढ़ाए जाने के सत्य को प्रस्तुत करने के बाद, यहूदा के गोत्र का सिंह ने एक और सत्य जोड़ा, जो अंतिम दिनों को संबोधित करता है।

यदि मनुष्य सारे संसार को प्राप्त कर ले, पर अपने ही प्राण को खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा; तब वह प्रत्येक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ जो खड़े हैं उनमें से कुछ ऐसे हैं जो मृत्यु का स्वाद न चखेंगे, जब तक कि वे मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लें। मत्ती 16:26-28.

जब एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के समापन काल में आधी रात की पुकार का संदेश यहूदा के गोत्र का सिंह मुहर खोलकर प्रकट करता है, तब कुछ ऐसे होंगे जो नहीं मरेंगे। तब उसने विशेष रूप से एक लाख चवालीस

हजार, अपनी अंतिम दिनों की उस प्रजा को, जो मृत्यु का स्वाद नहीं चखती, संबोधित किया। अतः कैसरिया फिलिप्पी की अपनी यात्रा के छह दिन बाद यहूदा के गोत्र के सिंह ने एक ऐसा सत्य मुहर खोलकर प्रकट किया जो उसके चेलों को क्रूस के आने वाले संकट के लिए सुदृढ़ करने वाला था, पर और भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से, वह शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के विषय में बोलता था।

और छह दिन बाद, यीशु पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ ले गया और उन्हें अलग ले जाकर एक ऊँचे पर्वत पर चढ़ा। और उनके सामने वह रूपांतरित हो गया; उसका मुख सूर्य के समान चमकने लगा, और उसके वस्त्र प्रकाश के समान श्वेत हो गए। और देखो, उन्हें मूसा और एलिय्याह दिखाई दिए, जो उससे बातें कर रहे थे। तब पतरस ने उत्तर देकर यीशु से कहा, प्रभु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; यदि तू चाहे तो हम यहाँ तीन डेरे बनाएँ—एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलिय्याह के लिए। वह अभी बोल ही रहा था कि देखो, एक उज्ज्वल बादल ने उन्हें ढँक लिया, और उस बादल के भीतर से एक आवाज़ आई, जो कहती थी, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ; उसकी सुनो। जब शिष्यों ने यह सुना, तो वे मुँह के बल गिर पड़े और अत्यन्त भयभीत हो गए। तब यीशु पास आया और उन्हें छूकर कहा, उठो; डरो मत। और जब उन्होंने अपनी आँखें उठाईं, तो उन्होंने किसी को नहीं देखा, केवल यीशु ही को। और जब वे पहाड़ से उतर रहे थे, तो यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी: जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुआँ में से फिर न जी उठे, तब तक इस दर्शन के विषय में किसी से न कहना। तब उसके शिष्यों ने उससे पूछा, तो शास्त्री क्यों कहते हैं कि पहले एलिय्याह आना चाहिए? यीशु ने उत्तर दिया, एलिय्याह तो सचमुच पहले आएगा और सब कुछ बहाल करेगा। पर मैं तुम से कहता हूँ कि एलिय्याह तो आ चुका है, और उन्होंने उसे पहचाना नहीं, परन्तु उसके साथ जैसा वे चाहते थे, वैसा ही किया। इसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा। तब शिष्यों ने समझा कि वह उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कह रहा था। मत्ती 17:1-13.

इस अनुच्छेद में यहूदा के गोत्र का सिंह परीक्षाकाल के समाप्त होने से ठीक पहले उन सत्यों की मुहर खोल रहा है जो एक लाख चवालीस हज़ार को मुहरबंद करती हैं, क्योंकि "समय निकट है।" पहले उसने क्रूस के दुःखभोग की पहचान कराई, और उस अनुभव को एक निर्णायक भेद के रूप में प्रस्तुत किया—एक ऐसे वर्ग के बीच जो देह को क्रूस पर चढ़ाने में अपनी इच्छा का प्रयोग करने से इंकार करेगा, और एक ऐसे वर्ग के बीच जो मसीह के उदाहरण का अनुसरण करेगा। फिर उसने उन्हें यह दर्शाया कि वे पृथ्वी के इतिहास की अंतिम पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, जब ऐसे लोग होंगे जो 11 सितंबर, 2001 को हुए मुहर के खुलने के समय से लेकर उसके लौटने तक जीवित रहेंगे।

तब उन्होंने अपने महिमामय स्वरूप का दर्शन कराया, और उनके साथ मूसा और एलिय्याह थे। जो अब खोला जा रहा मुहरबंदी का संदेश है, वह यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य है, जो मूसा और एलिय्याह से संबंधित है; और यह संदेश जुलाई 2023 में खुलना शुरू हुआ, जब प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय के दो गवाह—मूसा और एलिय्याह—को, रेखा पर रेखा, एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकों के रूप में स्थापित किया गया। जब उन तीनों चेलों ने वह दर्शन देखा और परमेश्वर की आवाज़ सुनी, तो "वे मुँह के बल गिर पड़े, और बहुत डर गए। तब यीशु उनके पास आए और उन्हें छूकर कहा, उठो, और मत डरो।"

जो दर्शन तीन शिष्यों ने देखा, वह अंतिम दिनों में मसीह की महिमा के दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है, और इसलिए वह वही दर्शन है जो दानिय्येल ने अध्याय दस में देखा था।

और मैं, दानिय्येल, अकेला ही उस दर्शन को देख रहा था; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे, उन्होंने वह दर्शन नहीं देखा; पर उन पर बड़ी थरथराहट छा गई, और वे अपने आप को छिपाने के लिए भाग गए। सो मैं अकेला रह गया, और उस बड़े दर्शन को देखा, और मुझमें कोई बल न रहा; क्योंकि मेरा सौंदर्य मुझमें बिगड़कर सड़न में बदल गया था, और मुझमें शक्ति न रही। तौभी मैंने उसके वचनों की ध्वनि सुनी; और जब मैंने उसके वचनों की ध्वनि सुनी, तब मैं मुँह के बल गिरकर गहरी निद्रा में पड़ गया, और मेरा मुख भूमि की ओर था। और देखो, एक हाथ ने मुझे छुआ, जिसने मुझे घुटनों और मेरे हाथों की हथेलियों पर सहारा देकर उठा दिया। और उसने मुझसे कहा, हे दानिय्येल, बड़े प्रिय पुरुष, उन वचनों को समझ जो मैं तुझसे कहता हूँ, और सीधे खड़ा हो जा; क्योंकि

अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ। और जब उसने मुझसे यह बात कही, तब मैं कांपता हुआ खड़ा हो गया। तब उसने मुझसे कहा, मत डर, दानिय्येल; क्योंकि जिस दिन से तूने समझने के लिए अपना मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन किया, उसी दिन से तेरे वचन सुन लिए गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आया हूँ। दानिय्येल 10:7-12.

मत्ती अध्याय सत्रह में रूपांतरण का दर्शन, दानिय्येल अध्याय दस का दर्पण-सदृश दर्शन है, जो तब घटित होता है जब यहजेकेल की मृत सूखी हड्डियाँ पुनर्जीवित होती हैं। वह दर्शन और उससे जुड़ा संदेश उपासकों की दो श्रेणियाँ प्रकट करता है—एक Exeter के तम्बू में, और दूसरी Watertown के तम्बू में—जो क्रमशः यिर्मयाह की “उपहास करने वालों की सभा” और यूहन्ना की “शैतान की सभा” हैं। जैसा कि दानिय्येल की गवाही में उस दर्शन के प्रभाव के साथ हुआ, वैसे ही “जब चेलों ने यह सुना, तो वे अपने मुख के बल गिर पड़े, और अत्यंत भयभीत हो गए। तब यीशु आकर उन्हें छुआ, और कहा, उठो; मत डरो।” दोनों ही मामलों में दर्शन श्रव्य और दृश्य था, और दोनों उदाहरणों में उसने भय उत्पन्न किया। दोनों गवाहियों में सामर्थ्य देने के लिए एक “स्पर्श” आवश्यक था।

रूपांतरण का दर्शन, अन्य बातों के साथ-साथ, इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर का वचन कभी निष्फल नहीं होता, क्योंकि मत्ती के सोलहवें अध्याय के अंतिम पद में यीशु ने कहा था कि “यहाँ खड़े कुछ लोग ऐसे हैं जो मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, जब तक वे मनुष्य के पुत्र को अपने राज्य में आते हुए न देख लें।” रूपांतरण “मनुष्य के पुत्र” के अपने राज्य में आगमन का एक चित्रण था।

रूपान्तरण के पर्वत पर मूसा मसीह की पाप और मृत्यु पर विजय के साक्षी थे। वह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे जो धर्मियों के पुनरुत्थान के समय कब्र से निकलेंगे। एलिय्याह, जिसे मृत्यु देखे बिना स्वर्ग में उठा लिया गया था, उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता था जो मसीह के दूसरे आगमन के समय पृथ्वी पर जीवित होंगे, और जो ‘एक क्षण में, पलक झपकते ही, अंतिम तुरही पर, बदल दिए जाएंगे;’ जब ‘यह नश्वर अमरता को धारण करेगा,’ और ‘यह नाशवान अविनश्वरता को धारण करेगा।’ 1 कुरिन्थियों 15:51-53। यीशु स्वर्ग के प्रकाश से आच्छादित थे, जैसा वह तब दिखाई देंगे जब वह ‘दूसरी बार पाप के बिना, उद्धार के लिए’ आएंगे। क्योंकि वह ‘अपने पिता की महिमा में पवित्र स्वर्गदूतों के साथ’ आएंगे। इब्रानियों 9:28; मरकुस 8:38। उद्धारकर्ता का चेलों से किया हुआ वचन अब पूरा हुआ। पर्वत पर भविष्य की महिमा के राज्य का लघुरूप में प्रस्तुतीकरण हुआ—मसीह राजा के रूप में, मूसा पुनरुत्थित संतों के प्रतिनिधि के रूप में, और एलिय्याह उठा लिए गए लोगों के प्रतिनिधि के रूप में। युगों की अभिलाषा, 421.

मुद्रांकन का सत्य में यह पहचान शामिल है कि एक लाख चवालीस हज़ार वे हैं जिनका प्रतिनिधित्व प्रकाशितवाक्य अध्याय सात में किया गया है, जो नहीं मरते, और जिनका प्रतिनिधित्व एलिय्याह करते हैं; और कि प्रकाशितवाक्य अध्याय सात की महान भीड़ वे हैं जिनका प्रतिनिधित्व मूसा करते हैं, जो मरते हैं। एक समूह को प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की पहली आवाज़ पर बुलाया जाता है, और दूसरे समूह को प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की दूसरी आवाज़ पर बुलाया जाता है।

स्पर्श के बाद, यीशु ने शिष्यों को आगे निर्देश दिए जब उन्होंने कहा, “यह दर्शन किसी को न बताना, जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुआँ में से फिर जी न उठे।” रूपान्तरण का दर्शन, जो दर्पण का दर्शन है, और छठे अध्याय में यशायाह का दर्शन, और तीसरे स्वर्ग में रहते हुए पौलुस का दर्शन, और यहजेकेल का ‘पहियों के भीतर पहिए’ वाला दर्शन—ये सब यहूदा के गोत्र के सिंहे द्वारा तब तक मुहरबंद रखे गए थे, जब तक मसीह का पुनरुत्थान न हो गया।

मसीह का पुनरुत्थान उसी दर्शन में मसीह के साथ रहे दो गवाहों के पुनरुत्थान का प्रतिनिधित्व करता है, और उनका पुनरुत्थान जुलाई 2023 में होना था। उस समय मुहरबंद संदेश प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय के दो गवाहों और विश्वासी जनों के दो समूहों के लिए खोल दिया जाएगा, और उसे संसार के अंत में मसीह की महिमा के दर्पण-सदृश दर्शन के संदर्भ में प्रस्तुत किया जाएगा।

मुहरबंदी का संदेश प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय के प्रथम तीन पदों के संदर्भ में भी रखा जाएगा, जहाँ संचार की वह श्रृंखला, जो दिव्यता और मानवता के संयोजन का प्रतिनिधित्व करती है, चरण-दर-चरण प्रक्रिया में यह बताती है कि मुहरबंदी का संदेश उन लोगों को कैसे प्रस्तुत किया जाता है जो एक लाख चवालीस हज़ार में शामिल होने के प्रत्याशी हैं।

क्रमबद्ध प्रक्रिया पिता से, पुत्र तक, स्वर्गदूत गब्रिएल तक, यूहन्ना तक, कलीसियाओं तक थी। दिव्य पिता से, दिव्य और मानवीय पुत्र तक, एक पतनरहित प्राणी (गब्रिएल) तक, एक पतित प्राणी (यूहन्ना) तक, एशिया (संसार) में जो कलीसियाएँ हैं, उनके पास। ये पाँच चरण यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य के सर्वप्रथम उल्लेख में विशेष रूप से पहचाने गए हैं, और किसी भी चरण का इनकार करना सबका इनकार करना है।

उस प्रकट हुई बात के अनुसार तब चेलों ने यीशु से पूछा, “फिर शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना आवश्यक है?” यीशु ने उत्तर देकर उनसे कहा, “निश्चय ही एलिय्याह पहले आएगा और सब बातों को बहाल करेगा। पर मैं तुम से कहता हूँ, एलिय्याह तो आ चुका है, पर वे उसे नहीं पहचानते थे, बल्कि उसके साथ जो कुछ चाहा, वही किया। इसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथों दुःख उठाएगा।” तब चेलों को समझ में आया कि वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में उनसे कह रहा था।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और प्रकाशितवाक्य के द्रष्टा यूहन्ना की भविष्योक्तिपूर्ण भूमिका, मुद्रांकन संदेश का एक तत्व है; और वाटरटाउन के तंबू में वे लोग जिन्होंने सैमुअल स्नो के संदेश की उपेक्षा करना चुना, उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो यह स्वीकार करने को तैयार नहीं कि प्रभु उन्हीं पुरुषों को चुनता है जिन्हें वह चुनना चाहता है। 1989 में चयनित वह स्वर, जिसने 1776 के दो सौ बीस वर्ष बाद, 1996 में अपना संदेश पहली बार प्रकाशित किया, जो वह प्रहरी था जिसने यह पहचाना कि 11 सितंबर, 2001 को तीसरा 'हाय' आ गया था, और जिसने 18 जुलाई, 2020 का पापपूर्ण संदेश प्रस्तुत किया, वह भी मुद्रांकन संदेश का हिस्सा है, और उसकी भूमिका का प्रतिनिधित्व यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला करता है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

मैंने एक ऐसे समूह को देखा जो सतर्क और दृढ़ खड़ा था, और उन लोगों को तनिक भी समर्थन नहीं दे रहा था जो समुदाय के स्थापित विश्वास को डगमगाने का प्रयत्न करते। परमेश्वर ने उन पर प्रसन्नता से दृष्टि की। मुझे तीन पायदान दिखाए गए—पहले, दूसरे और तीसरे स्वर्गदूतों के संदेश। मेरे साथ रहने वाले स्वर्गदूत ने कहा, “हाय उस पर जो इन संदेशों के किसी पत्थर को भी हिलाए या किसी कील को भी छेड़े। इन संदेशों की सच्ची समझ अत्यंत महत्वपूर्ण है। आत्माओं का भाग्य इस बात पर टिका है कि इन्हें किस प्रकार ग्रहण किया जाता है।” मुझे फिर से इन संदेशों के माध्यम से ले जाया गया, और मैंने देखा कि परमेश्वर की प्रजा ने अपना अनुभव कितनी भारी कीमत चुका कर प्राप्त किया था। वह बहुत दुःख और कठोर संघर्ष के द्वारा प्राप्त हुआ था। परमेश्वर ने उन्हें कदम-दर-कदम अग्रसर किया, यहाँ तक कि उसने उन्हें एक ठोस, अचल मंच पर खड़ा कर दिया। मैंने देखा कि कुछ व्यक्ति उस मंच के पास आए और नींव की जाँच की। कुछ ने आनन्द के साथ तुरंत उस पर कदम रखा। दूसरों ने नींव में दोष ढूँढना शुरू किया। वे चाहते थे कि सुधार किए जाएँ, तब मंच अधिक पूर्ण होगा और लोग बहुत अधिक प्रसन्न होंगे। कुछ लोग उसे परखने के लिए मंच से उतर गए और घोषित किया कि इसकी नींव गलत ढंग से डाली गई है। परन्तु मैंने देखा कि लगभग सब उस मंच पर दृढ़तापूर्वक खड़े रहे और जिन्होंने उतर गए थे उन्हें अपनी शिकायतें बंद करने के लिए समझाया; क्योंकि परमेश्वर प्रधान शिल्पी था, और वे उसी के विरुद्ध लड़ रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का वर्णन किया, जिन्होंने उन्हें उस दृढ़ मंच तक पहुँचा दिया था, और मिलकर अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और ऊँचे स्वर से परमेश्वर की महिमा की। इसका प्रभाव उन में से कुछ पर पड़ा जिन्होंने शिकायत की थी और मंच छोड़ दिया था, और वे नम्र मुख-भाव के साथ फिर से उस पर चढ़ गए।

मेरा ध्यान मसीह के प्रथम आगमन की घोषणा की ओर फिर से दिलाया गया। यूहन्ना को एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में यीशु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था। यूहन्ना की गवाही को अस्वीकार करने वालों को यीशु की शिक्षाओं से कोई लाभ नहीं हुआ। उसके आने की भविष्यसूचना देने वाले संदेश के प्रति उनके विरोध ने उन्हें ऐसी स्थिति में ला दिया जहाँ वे यह कि वह मसीहा है, इस बात के सबसे सशक्त प्रमाणों को भी आसानी से ग्रहण नहीं कर सके। शैतान ने यूहन्ना के संदेश को अस्वीकार करने वालों को और आगे बढ़ाया कि वे मसीह को भी अस्वीकार करें और उसे क्रूस पर चढ़ाएँ। ऐसा करके उन्होंने अपने आप को ऐसी दशा में डाल लिया जहाँ वे पिन्तेकुस्त के दिन मिलने वाली उस आशीष को प्राप्त न कर सके, जो उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश का मार्ग सिखाती। मन्दिर का परदा फट जाना यह दिखाता था कि यहूदी बलिदान और नियम-विधियाँ अब स्वीकार नहीं किए जाएँगे। महान बलिदान चढ़ाया जा चुका था और स्वीकार भी कर लिया गया था, और पवित्र आत्मा, जो पिन्तेकुस्त के दिन उतरा, शिष्यों के मनो को पृथ्वीस्थ पवित्रस्थान से स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर ले गया, जहाँ यीशु अपने ही लहू के द्वारा प्रवेश कर चुका था, ताकि अपने शिष्यों पर अपने प्रायश्चित्त के लाभ उंडेल दे। परन्तु यहूदी पूर्ण अंधकार में छोड़ दिए गए। उद्धार की योजना के विषय में जो प्रकाश उन्हें मिल सकता था, वह सब उन्होंने खो दिया, और फिर भी वे अपने निरर्थक बलिदानों और भेंटों पर भरोसा करते रहे। स्वर्गीय पवित्रस्थान ने पृथ्वीस्थ की जगह ले ली थी, फिर भी उन्हें इस परिवर्तन का ज्ञान न था। अतः वे पवित्र स्थान में मसीह की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सके।

बहुत से लोग यहूदियों द्वारा मसीह को अस्वीकार करने और उन्हें सूली पर चढ़ाने की करनी को भय से देखते हैं; और जब वे उनके अपमानजनक दुर्व्यवहार का इतिहास पढ़ते हैं, तो उन्हें लगता है कि वे उनसे प्रेम करते हैं और पतरस की तरह उन्हें नकारते नहीं, न ही यहूदियों की तरह उन्हें सूली पर चढ़ाते। परन्तु परमेश्वर, जो सबके हृदयों को पढ़ता है, ने यीशु के लिए उस प्रेम को परीक्षा में डाल दिया है जिसका वे दावा करते थे। समूचे स्वर्ग ने बड़े ही गहन रुचि के साथ पहले स्वर्गदूत के संदेश के स्वीकार को देखा। परन्तु बहुतों ने, जो यीशु से प्रेम करने का दावा करते थे और जो क्रूस की कथा पढ़ते समय आँसू बहाते थे, उसके आगमन के शुभ समाचार का उपहास किया। संदेश को आनन्द के साथ ग्रहण करने के बजाय, उन्होंने उसे एक भ्रम घोषित कर दिया। उन्होंने उन लोगों से बैर किया जो उसके प्रकट होने से प्रेम करते थे, और उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर दिया। जिन्होंने पहले संदेश को ठुकरा दिया, वे दूसरे से लाभान्वित नहीं हो सके; और न ही वे आधी रात की पुकार से लाभान्वित हुए, जिसका उद्देश्य उन्हें विश्वास के द्वारा यीशु के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान के परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार करना था। और पहले दो संदेशों को अस्वीकार करके उन्होंने अपनी समझ को इतना अंधकारमय कर लिया है कि वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में कोई प्रकाश नहीं देख पाते, जो परमपवित्र स्थान में जाने का मार्ग दिखाता है। मैंने देखा कि जैसे यहूदियों ने यीशु को सूली पर चढ़ाया, उसी प्रकार नाम मात्र की कलीसियाओं ने इन संदेशों को सूली पर चढ़ा दिया है; इसलिए उन्हें परमपवित्र में जाने के मार्ग का ज्ञान नहीं है, और वे वहाँ यीशु की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सकते। यहूदियों के समान, जिन्होंने अपने निष्फल बलिदान चढ़ाए, वे अपनी निष्फल प्रार्थनाएँ उस कक्ष की ओर अर्पित करते हैं जिसे यीशु छोड़ चुके हैं; और शैतान, इस छल से प्रसन्न होकर, धार्मिक रूप धारण करता है और अपनी शक्ति, अपने चिन्हों और झूठे आश्चर्यों के साथ कार्य करते हुए इन कथित मसीहियों के मनो को अपनी ओर मोड़ लेता है, ताकि उन्हें अपने फंदे में कस दे। कुछ को वह एक प्रकार से धोखा देता है और कुछ को दूसरे प्रकार से। अलग-अलग मनो को प्रभावित करने के लिए उसने भिन्न-भिन्न भ्रम तैयार कर रखे हैं। कुछ लोग एक धोखे को भय से देखते हैं, पर दूसरे को सहज ही स्वीकार कर लेते हैं। शैतान कुछ लोगों को आत्मवाद से धोखा देता है। वह प्रकाश के स्वर्गदूत के रूप में भी आता है और झूठे सुधार आंदोलनों के द्वारा देश भर में अपना प्रभाव फैलाता है। कलीसियाएँ हर्षित हो उठती हैं और समझती हैं कि परमेश्वर उनके लिए अद्भुत रीति से कार्य कर रहा है, जबकि वह किसी और आत्मा का काम होता है। यह उत्तेजना ठंडी पड़ जाएगी और संसार तथा कलीसिया को पहले से भी बुरी दशा में छोड़ जाएगी।

"मैंने देखा कि नाममात्र के एडवेंटिस्टों और पतित कलीसियाओं के बीच परमेश्वर की ईमानदार संतानें हैं, और विपत्तियाँ उंडेली जाने से पहले, इन कलीसियाओं से सेवक और लोग बाहर बुलाए जाएँगे और वे खुशी से सत्य को ग्रहण करेंगे। शैतान यह जानता है; और तीसरे स्वर्गदूत की ऊँची पुकार दिए जाने से पहले, वह इन धार्मिक मंडलियों में एक उत्तेजना पैदा करता है, ताकि जिन्होंने सत्य को अस्वीकार किया है, वे समझें कि परमेश्वर उनके

साथ है। वह आशा करता है कि वह ईमानदारों को धोखा दे और उन्हें यह सोचने के लिए उकसाए कि परमेश्वर अब भी कलीसियाओं के लिए काम कर रहा है। परन्तु ज्योति चमकेगी, और जितने ईमानदार हैं वे पतित कलीसियाओं को छोड़ देंगे और शेष जन के साथ खड़े हो जाएँगे।" अर्ली राइटिंग्स, 258-261.